BHIC 133: HISTORY OF INDIA : FROM C. 1206-1707

IMPORTANT TOPICS IN HINDI

PREPARE FOR DECEMBER EXAMS WITH US

PDF ALSO AVAILABLE

PART -2

1. इक्ता की व्याख्या और प्रमुख विशेषताएँ:

इक्ता एक प्रशासनिक प्रणाली थी, जिसका उपयोग दिल्ली सुलतानate और मुग़ल साम्राज्य में किया गया। इसमें, एक व्यक्ति (इक्तेदार) को ज़मीन का प्रभार दिया जाता था, जो राज्य के सैन्य और प्रशासनिक कार्यों को संभालने में सहायक था। इस प्रणाली का उद्देश्य राज्य के सैनिकों का वेतन देना और प्रशासनिक कार्यों को सुचारू रूप से चलाना था।

इक्ता की प्रमुख विशेषताएँ:

- **भूमि का आवंटन:** इक्तेदार को एक विशेष भूभाग या प्रांत का प्रभार दिया जाता था। वह उस भूमि से प्राप्त राजस्व का उपयोग सैनिकों के वेतन और प्रशासनिक खर्चों के लिए करता था। भूमि का स्वामित्व राज्य के पास रहता था, जबकि इक्तेदार का केवल प्रबंधन अधिकार होता था।
- **सैन्य वेतन:** इक्तेदार की ज़िम्मेदारी थी कि वह अपनी सैनिक टुकड़ी को वेतन दे, और इसके लिए वह भूमि से प्राप्त राजस्व का इस्तेमाल करता था। यदि भूमि से पर्याप्त राजस्व प्राप्त नहीं होता, तो इक्तेदार को अपने खर्चों को पूरा करने में कठिनाई हो सकती थी।
- **राजकीय नियंत्रण:** इक्तेदार को पूरी स्वतंत्रता नहीं थी; राज्य के अधिकारियों द्वारा उसकी गतिविधियों पर निगरानी रखी जाती थी। यह प्रणाली साम्राज्य के प्रशासन को सुनिश्चित करने के लिए थी।
- **सैन्य और प्रशासन का संतुलन:** इक्ता प्रणाली का उद्देश्य सैनिकों की भर्ती, वेतन भुगतान और प्रशासनिक कार्यों का संतुलन बनाए रखना था। यह प्रणाली दिल्ली सुलतानate के समय में प्रशासनिक और सैन्य मामलों को जोड़ने के लिए उपयोगी सिद्ध हुई।

2. अकबर के अधीन मनसब प्रणाली के प्रमुख लक्षण:

मनसब प्रणाली अकबर के शासनकाल में स्थापित एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था थी। इस प्रणाली में, अधिकारियों (मनसबदारों) को एक निर्धारित रैंक (मनसब) दी जाती थी, जो उनकी सैन्य ताकत और प्रशासनिक जिम्मेदारियों को दर्शाती थी। मनसब का निर्णय उनकी सैन्य टुकड़ी की संख्या के आधार पर किया जाता था।

Scholarly Minds

मनसब प्रणाली के प्रमुख लक्षण:

- **मनसब और पदोन्नति:** मनसबदारों को 'जाती' और 'सवार' के आधार पर वर्गीकृत किया जाता था। 'जाती' उस सैनिक संख्या को दर्शाती थी, जिसे एक मनसबदार नियंत्रित करता था, और 'सवार' उस संख्या को दर्शाती थी, जो उसके पास घुड़सवार सैनिकों की थी। यह संख्या उसके रैंक और कर्तव्यों को निर्धारित करती थी।
- **प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ:** मनसबदारों का कार्य न केवल सैन्य संचालन था, बल्कि प्रशासनिक कार्यों में भी उन्हें जिम्मेदारी दी जाती थी। वे अपने क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने, कर वसूलने और साम्राज्य के अन्य प्रशासनिक कार्यों को संचालित करते थे।
- **वेतन और भत्ते:** मनसबदारों को उनके रैंक और जिम्मेदारियों के अनुसार वेतन और भत्ते दिए जाते थे। उनके वेतन का भुगतान भूमि राजस्व (इक्ता प्रणाली के तहत) से किया जाता था, जो उनके अधिकार क्षेत्र से एकत्रित होता था।
- **मुग़ल साम्राज्य की सैन्य शक्ति:** इस प्रणाली ने मुग़ल साम्राज्य की सैन्य ताकत को बनाए रखने में मदद की। यह प्रणाली एक मजबूत, केंद्रित और सुव्यवस्थित सैन्य बल सुनिश्चित करती थी, जो अकबर के साम्राज्य के विस्तार और स्थिरता के लिए आवश्यक था।

3. मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति:

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति समाज, धर्म और संस्कृति के दृष्टिकोण से भिन्न थी। विभिन्न साम्राज्यों और धार्मिक परंपराओं के अनुसार उनकी स्थिति का निर्धारण किया जाता था। कई बार महिलाओं को सामाजिक रूप से सीमित किया गया था, लेकिन कुछ महिलाओं ने राजनीति, धर्म और संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया।

हिंदू समाज में महिलाओं की स्थिति:

- **पारंपरिक भूमिकाएँ:** हिंदू समाज में महिलाएँ मुख्य रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित थीं। वे परिवार की देखभाल, संतान पालन और धार्मिक कर्तव्यों में व्यस्त रहती थीं।
- **सती प्रथा और बाल विवाह:** मध्यकाल में सती प्रथा, बाल विवाह और पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थीं, जो महिलाओं की स्थिति को और भी सीमित कर देती थीं। खासकर उच्च वर्ग में यह प्रथाएँ ज्यादा थीं।
- **साहित्यिक और धार्मिक योगदान:** हालांकि सामाजिक स्थिति पर रोक थी, कुछ महिलाओं ने साहित्य और धार्मिक क्षेत्र में योगदान दिया। उदाहरण के रूप में **मीराबाई** का नाम लिया जा सकता है, जो एक प्रसिद्ध भक्ति संत और कवियित्री थीं, जिन्होंने कृष्ण भक्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **राजनीतिक भूमिका:** कुछ महिला शासकों ने भी इतिहास में अपनी भूमिका निभाई, जैसे **राजमाता **आम्बा** और **रानी दुर्गावती**। हालांकि, यह अपवाद था और सामान्य स्थिति से भिन्न था।

मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति:

- **पर्दा प्रथा:** मुस्लिम समाज में भी महिलाओं की भूमिका पर्दे में सीमित थी। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में महिलाओं ने राजनीति में भूमिका निभाई, जैसे कि **मुगल सम्राज्य** के दौरान **महम ऐ अली**, **जहाँआरा बेगम** और **Nur Jahan** ने महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णयों में हस्तक्षेप किया।

Scholarly Minds

- **धार्मिक अधिकार:** महिलाओं को धार्मिक कार्यों में भाग लेने की कुछ स्वतंत्रता थी, लेकिन सामाजिक दबाव और परिवारिक संरचना ने उनके अधिकारों को सीमित किया।

4. दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन:

भक्ति आंदोलन का आरंभ दक्षिण भारत में 7वीं-8वीं शताब्दी में हुआ था और इसने पूरे भारत में महत्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था **ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति** को बढ़ावा देना और सामाजिक असमानताओं को नकारना।

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन के प्रमुख पहलू:

- **संतों की भूमिका:** दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत **नायनार** और **अलवार** संतों द्वारा हुई। इन संतों ने अपनी भक्ति काव्य रचनाओं के माध्यम से भगवान शिव और भगवान विष्णु के प्रति असीम प्रेम और भक्ति को व्यक्त किया।
- **वैष्णव और शैव भक्ति:** भक्ति आंदोलन मुख्यतः **वैष्णव** और **शैव** परंपराओं में फैला था। अलवार संतों ने विष्णु की भक्ति की, जबकि नायनार संतों ने शिव की भक्ति की।
- **सामाजिक सुधार:** भक्ति आंदोलन ने जातिवाद, धार्मिक पाखंड और अनुष्ठानिक धार्मिकता के खिलाफ संघर्ष किया। संतों ने ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति को सभी जातियों और वर्गों के लिए सुलभ बनाया।
- **आध्यात्मिक स्वतंत्रता:** इस आंदोलन ने एक नया दृष्टिकोण पेश किया, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने का अधिकार था, बिना किसी मध्यस्थ के।

5. दिल्ली सुल्तानों की सैन्य व्यवस्था:

दिल्ली सुलतानate की सैन्य व्यवस्था अत्यधिक संगठित और सक्षम थी, और यह राज्य की सुरक्षा, विस्तार और शक्ति को बनाए रखने के लिए बनाई गई थी। सुलतानate के सैन्य संरचना में विभिन्न प्रकार की सेनाओं का समावेश था।

मुख्य पहलू:

- **सैन्य संरचना:** दिल्ली सुलतानate में सेना को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जाता था—पैदल सेना (इन्फैंट्री), घुड़सवार सैनिक (कावल) और हाथी सेना। इन सेनाओं को एक निश्चित आदेश और संरचना में व्यवस्थित किया गया था।
- **सैन्य प्रशिक्षण:** सुलतानate में सैन्य प्रशिक्षण को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। सैन्य अधिकारी और सैनिक नियमित प्रशिक्षण से गुजरते थे, जिससे उनकी दक्षता और युद्ध क्षमता में वृद्धि होती थी।
- **इक्ता और मनसब प्रणाली:** सैन्य अधिकारियों और मनसबदारों को इक्ता प्रणाली के तहत ज़मीन आवंटित की जाती थी, जो उनके सैनिकों की संख्या और प्रशासनिक जिम्मेदारियों के आधार पर तय होती थी। यह प्रणाली सैन्य और प्रशासनिक कार्यों को एकीकृत करने के लिए थी।
- **मुल्कियत और फौजदारी:** सुलतानate के सैन्य नेता और अधिकारी (मुल्क और फौजदार) को जमीन का हिस्सा मिलता था, और उनका मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती और युद्धों में नेतृत्व प्रदान करना था।

Scholarly Minds

6. मुगल मुद्रा प्रणाली:

मुगल मुद्रा प्रणाली भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और सुव्यवस्थित मुद्रा व्यवस्थाओं में से एक थी। मुग़ल सम्राटों ने अपनी शासन व्यवस्था के तहत एक मजबूत और प्रभावी मुद्रा प्रणाली स्थापित की, जिसने व्यापार और वाणिज्य को नया आकार दिया।

मुख्य पहलू:

- **रुपया और दिरहम:** मुग़ल साम्राज्य में सबसे महत्वपूर्ण मुद्राएँ थीं—**रुपया** (चांदी का सिक्का) और **दिरहम** (सोने का सिक्का)। रुपया प्रमुख मुद्रा था, जबकि दिरहम को व्यापार और उच्च लेन-देन के लिए प्रयोग किया जाता था।
- **मुद्रण कार्य:** मुग़ल सम्राटों ने मुद्रण कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए कई सरकारी टकसाल स्थापित किए। प्रत्येक सिक्के पर सम्राट का नाम और उसकी उपाधि अंकित होती थी।
- **वाणिज्य में भूमिका:** मुग़ल मुद्रा प्रणाली ने भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा दिया। यह प्रणाली न केवल भारत के अंदर, बल्कि इसके पड़ोसी क्षेत्रों में भी व्यापारिक संबंधों को सुगम बनाती थी।

7. चांद बीबी:

चांद बीबी अहमदनगर की सुलतानate की एक प्रमुख रानी और सैन्य नेता थीं। उन्हें भारतीय इतिहास में एक साहसी और कड़ी शासक के रूप में याद किया जाता है। चांद बीबी ने मुग़ल साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया और अहमदनगर राज्य की रक्षा की।

मुख्य पहलू:

- **सैन्य नेतृत्व:** चांद बीबी ने अपने शासनकाल के दौरान कई सैन्य अभियानों में भाग लिया। उन्होंने अहमदनगर के किलों और नगरों की रक्षा की और मुग़ल सेना के खिलाफ संघर्ष किया।
- **राजनीतिक भूमिका:** चांद बीबी ने अहमदनगर सुलतानate के प्रशासन को संभाला और मुग़ल आक्रमणों का सामना किया। उनकी राजनीतिक सूझबूझ और सैन्य नेतृत्व ने अहमदनगर को मुग़ल साम्राज्य से सुरक्षित रखा।
- **महिला शासक:** चांद बीबी का कार्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणा बन गया, क्योंकि उन्होंने न केवल प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ संभालीं, बल्कि युद्ध भूमि पर भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

Scholarly Minds